“लुम्बिनी से काहू-जो-दरो तक अशोक सम्राट”

लेखक: भरत लाल महतो(MCA Pune University)

भाषा: मगही

A CHANCE DISCOVERY

एक संयोगवश खोज

प्रस्तावना:

बौद्ध परंपरा के आदि धरोहर - सिंधु घाटी से लुम्बिनी तक

बौद्ध धम्म, मानवता के शांति, करुणा, आ अहिंसा के संदेश वाहक, एगो ऐतिहासिक परंपरा हय, जेकर जड़ि 8000 वर्ष पुराना सिंधु घाटी सभ्यता में मिलै अ । मोहनजोदड़ो आ हरप्पा जइसन पुरातात्विक स्थल, जोन सभ्यता के उत्कृष्टता के उदाहरण देई अ, बतबै अ कि बुद्धमय धरोहर के बीज गौतम बुद्ध से बहुत पहिले रोपल गेल रहे। ई सभ्यता के गर्भ से 27 गो बुद्ध के परंपरा निकलल, जोन गौतम बुद्ध (563 ईसा पूर्व) के आवे से हजारों वर्ष पहिले मानवता के मोक्ष के दिशा दे रहल रहे।

नेपाल के लुम्बिनी, जोन सिद्धार्थ गौतम के जन्मस्थली हय, आजो बौद्ध धम्म के प्रवर्द्धन के प्रतीक हय। लुम्बिनी न केवल गौतम बुद्ध के प्रेरणा स्थल रहल, बल्कि ओहि परंपरा के विस्तार में एगो महत्वपूर्ण कड़ी बनल, जेकर प्रभाव काहू-जो-दरो तक देखे के मिलै अ। काहू-जो-दरो, सिंधु क्षेत्र के बौद्ध स्तूप, प्राचीन भारतीय-रोमन टेराकोटा कला आ बौद्ध वास्तुकला के अद्वितीय उदाहरण हय। ई स्थल बताबै कि दक्षिण एशिया में बौद्ध परंपरा के आस्था आ कला के संगम कइसे होईत रहल।

ए किताब में बौद्ध परंपरा के ऐतिहासिक विकास, सांस्कृतिक धरोहर आ धार्मिक स्थलों के महत्त्व पर प्रकाश डालल गेल हय। खासकर के, काहू-जो-दरो जइसन स्थल, जोन हीनयान आ महायान परंपरा के मिश्रण के गवाही देई अ, ई डेखबै अ कि ई क्षेत्र कइसे हजारों साल तक बौद्ध परंपरा के केंद्र रहल।

लुम्बिनी से काहू-जो-दरो तक अशोक सम्राट

ई पुस्तक के उद्‌देश्य हय बौद्‌ध धम्म के प्राचीन धरोहर के समझे आ संरक्षित करे में सहायता प्रदान करे के । ई आशा कयल जा रहल हय कि ई पुस्तक पाठक लोग के इतिहास के गहराई, कला के उत्कृष्टता, आ धम्म के मूल भाव से परिचित करावे के मार्गदर्शक साबित होयत।

बौद्‌ध धम्म केवल आस्था ना, बल्कि एगो सभ्यता के प्रतीक हय, जेकरा समझे आ संरक्षित करना हमनी के नैतिक जिम्मेदारी बनैत हय।

लुम्बिनी से काहू-जो-दरो तक अशोक सम्राट के योगदान"

सिंधु घाटी सभ्यता, जेकरा 29 may 2016 स्वदेश दैनिक पत्रिका के अनुसार, इन्डियन इन्स्टिच्युट अफ टेक्नोलोजी (IIT) खड़गपुर और Archaeological Survey of India (ASI) के वैज्ञानिकों के मुताबिक सिंधु घाटी के सभ्यता 8000 साल पुरान हय।मानवता के सबसे प्राचीन सभ्यता में से एक रहल ई सिन्धु घाटी। मोहनजोदड़ो आ हड़प्पा के खुदाई से प्राप्त प्रमाण ई बतैलक कि बौद्‌ध परंपरा के मूल तत्व ओही समय से मौजूद रहल। सिंधु सभ्यता में शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व, करुणा, आ अहिंसा के विचार, जे बाद में बौद्‌ध धम्म के मुख्य आधार बनल, स्पष्ट रूप से देखे के मिलै अ।

सिंधु सभ्यता से निकसल आध्यात्मिक परंपरा के 27 गो बुद्‌ध के धारा में समाहित मानल जाई अ । 28 वां बुद्‌ध, लुम्बिनी में जन्मल सिद्‌धार्थ गौतम, ई परंपरा के पुनर्जीवित कयलन। उनका द्‌वारा दिहल ज्ञान आ दर्शन, जेकर मूल में मानवता आ करुणा के संदेश रहल, बौद्‌ध धम्म के आधार बनल। लुम्बिनी केवल उनका जन्मस्थल न रहल, बल्कि ई बौद्‌ध धम्म के पुनर्जागरण के प्रतीक बनल।

सिद्धार्थ गौतम के विचार के प्रवर्द्धन आ संरचना मौर्य साम्राज्य के समय विशेष रूप से देखल जाई अ। अशोक सम्राट, जे बौद्ध धम्म के सबसे बड़ा संरक्षक मानल जाई अ, बौद्ध धम्म के प्रचार-प्रसार खातिर अनेक स्तूप, विहार आ अभिलेख बनवयलन। अशोक के धम्म नीति केवल धार्मिक आधार पर न रहल, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक आ राजनीतिक संरचना के संगम के रूप में स्थापित भेल।

सिंधु क्षेत्र में काहू-जो-दरो, जे बौद्ध कला आ वास्तुकला के अद्वितीय स्थल पहिले से हि रहल, अशोक के समय में विशेष महत्व प्राप्त कयलक। ई स्थल, बौद्ध धम्म के प्राचीन जड़ि आ गुप्तकालीन स्थापत्य शैली के अद्वितीय उदाहरण हय। यहाँ टेराकोटा मूर्तिशिल्प आ सजावटी वास्तुकला गांधार आ गुप्त परंपरा के संगम दर्शाबै अ।

ई स्पष्ट हय कि बौद्ध धम्म के जड़ि सिंधु सभ्यता के आध्यात्मिक विरासत से जुड़ल रहल। लुम्बिनी में सिद्धार्थ गौतम के जन्म आ अशोक सम्राट के संरचनात्मक योगदान, ई सभ्यता के स्थायित्व आ विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभयलक। ई परंपरा, जेकरा में सिंधु घाटी से लुम्बिनी आ काहू-जो-दरो तक के ऐतिहासिक यात्रा समाहित हय, आजो मानवता खातिर प्रेरणा के स्रोत हय।

२८ गो बुद्ध के जानकारी आउर् सम्राट अशोक द्वारा बनावल संरचना के ब्यौरा

बुद्ध वंशावली के अनुसार बौद्ध धम्म में गौतम बुद्ध २८वां बुद्ध हतन। बौद्ध धम्म के संस्थापक गौतम बुद्ध न हय। हिन त धम्म के संवर्धन,प्रवर्द्धन आ संरक्षण कर के धम्म के प्रचार कैलन। धम्म के स्थापना त हजारों वर्ष पहिले सिन्धु घाटी सभ्यता के तनहनकर बुद्ध जी कायलन्न। गौतम बुद्ध से पहिले २७

बुद्ध संसार में धम्म के प्रचार आउर् जीव के दुख से मुक्ति के रास्ता देखवलन। सम्राट अशोक, जोन बौद्ध धम्म में गहरा श्रद्धा रखै अ, होई छै बुद्ध लोगन के सम्मान में कतेक स्तूप, स्तंभ आउर् विहार बनववले । नीचे सब बुद्ध के नाम, महत्व आउर् अशोक के बनावल संरचना के चर्चा कइले हतन।

---

२८ बुद्ध के नाम (क्रमवार):

1. तनहनकर बुद्ध(Tanhaṅkara)

2. मेदनकर बुद्ध (Medaṅkara)

3. सरनंकरी (Saraṇaṅkara)

4. दीपंकर (Dīpaṅkara)

5. कोंडञ्ञ (Koṇḍañña)

6. मंगला (Maṅgala)

7. सुमना (Sumana)

8. रेवत (Revat)

9. सोभित (Sobhita)

लुम्बिनी से काहू-जो-दरो तक अशोक सम्राट

10. अनुमदस्सी (Anomadassī)

11. पदुम (Paduma)

12. नरद (Nārada)

13. पदुमुत्तर (Padumuttara)

14. सुमेधा (Sumedha)

15. सुवर्णसम (Suvaṇṇasama)

16. पियदस्सी (Piyadassī)

17. अत्थदस्सी (Atthadassī)

18. धम्मदस्सी (Dhammadassī)

19. सिद्धार्थ (Siddhattha)

20. तिस्स (Tissa)

21. फुस्स (Phussa)

22. विपस्सी (Vipassī)

लुम्बिनी से काहू-जो-दरो तक अशोक सम्राट

23. सिखी (Sikhī)

24. वेस्सभू (Vessabhū)

25. ककुसंध (Kakusandha)

26. कोणागमन (Koṇāgamana)

27. कस्सप (Kassapa)

28. गौतम बुद्ध (सिद्धार्थ गौतम)

लुम्बिनी से काहू-जो-दरो तक अशोक सम्राट

लुम्बिनी से काहू-जो-दरो तक अशोक सम्राट

सम्राट अशोक द्वारा बनावल संरचना (बुद्ध से जुड़ल)

1. दीपंकर बुद्ध (Dīpaṅkara Buddha)

महत्व: दीपंकर बुद्ध ओह बुद्ध हतन, जोन भविष्यवाणी कइले हतन कि

सिद्धार्थ गौतम एक दिन बुद्ध होई छै।

संरचना: सम्राट अशोक दीपंकर बुद्ध के सम्मान में कतेक स्तूप बनववले, खास कर के बिहार आउर् मध्य प्रदेश में।

2. गौतम बुद्ध (सिद्धार्थ गौतम)

प्रमुख स्थान आउर् संरचना:

- **सांची स्तूप (मध्य प्रदेश):**
  ई स्तूप सम्राट अशोक के सबसे महत्वपूर्ण संरचना में से एक हय।

- **धमेख स्तूप (सारनाथ, उत्तर प्रदेश):**
  ओह जगह बनल हय, जहवां बुद्ध आपन पहिला उपदेश देलक।

- **लुंबिनी स्तंभ (लुंबिनी, नेपाल):**
  बुद्ध के जन्मस्थान पर बनावल स्मारक हय।

3. ककुसंध बुद्ध (Kakusandha Buddha)

स्थान: बोधगया, बिहार।

संरचना: अशोक ओह जगह पर स्तूप आउर् विहार बनववले, जोन ककुसंध बुद्ध से जुड़ल हय।

4. कोणागमन बुद्ध (Koṇāgamana Buddha)

स्थान: नेपाल आउर् उत्तर बिहार।

संरचना: कोणागमन बुद्ध के सम्मान में अशोक द्वारा बनावल स्मारक आउर् स्तंभ।

लुम्बिनी से काहू-जो-दरो तक अशोक सम्राट

5. कस्सप बुद्ध (Kassapa Buddha)

स्थान: बोधगया।

संरचना: कस्सप बुद्ध के सम्मान में अशोक द्वारा बनावल विहार।

सम्राट अशोक आउर् बौद्ध धम्म के प्रसार

८४,००० स्तूप के निर्माण:

सम्राट अशोक आपन शासनकाल में ८४,००० स्तूप बनववले, जेहमें बुद्ध के अवशेष आउर् धम्म के प्रतीक रखल गइल।

शिलालेख आउर् स्तंभ:

अशोक द्वारा बनावल स्तंभ आउर् शिलालेख पर बौद्ध धम्म के शिक्षा खुदल हय।

प्रमुख संरचना आउर् स्थान:

- सांची स्तूप: मध्य प्रदेश
- धमेख स्तूप: सारनाथ, उत्तर प्रदेश
- बोधगया विहार: बिहार
- तक्षशिला स्तूप: पाकिस्तान
- लुंबिनी स्मारक: नेपाल

लुम्बिनी से काहू-जो-दरो तक अशोक सम्राट

निष्कर्ष

सम्राट अशोक के बौद्ध धम्म के प्रति समर्पण आउर् बनावल संरचना आज भी बौद्ध धम्म आउर् भारतीय संस्कृति के प्रतीक हय। हतनकर प्रयास से बौद्ध धम्म भारत से निकल के श्रीलंका, तिब्बत आउर् अन्य देश में फैसल।

अधिक जानकारी के स्रोत:

- सम्राट अशोक (विकिपीडिया)
- सांची स्तूप

पुनर्निर्माण के प्रयास

हाल में गुम भेल काहू-जो-दरो, मीरपुरखास के बौद्ध स्तूप मूल रूप से एगो बड़का बौद्ध सभ्यता के हिस्सा रहल आ प्राचीन इंडो-रोमन टेराकोटा कला आ वास्तुकला के सभसे बढ़िया उदाहरण में से एगो हय। ई ठांव, जोन लगभग 30 एकड़ (लगभग 12 हेक्टेयर) जमीन पर फैलल रहल, आई के पाकिस्तान के सिंध प्रांत के थार आ पार्कर जिला मुख्यालय मीरपुरखास के उत्तर में रहल हय। हाल के चित्र से पता चलल कि मुख्य स्तूप आ ओकर आधार स्तर समेत पूरा ठांव नष्ट हो चुकल हय (Fig. 1, Fig. 2)।

काहू-जो-दरो बौद्ध स्तूप एगो चान्स खोज रहल। ई ठांव सबसे पहिले जनरल जॉन जैकब (1812-1858) के नजर में आयल, जोन सिंध के एक्टिंग कमिश्नर रहलन। हालांकि, ओह घरी एकर

लुम्बिनी से काहू-जो-दरो तक अशोक सम्राट

ऐतिहासिक महत्त्व के उनकरा समझ न रहल। 1859 में, ब्रिटिश अधिकारी जेम्स गिब्स ई ठांव के ईंट के प्लेटफॉर्म या "थुल / टाल" के अवशेष बतयलन। ओह घरी गिब्से खोदाई कयलक, आ उपरी भाग से एगो सुंदर माटी के बर्तन निकलल, जै में क्रिस्टल आ नीलम के टुकड़ा रहलक। हालांकि, ई खोज के ठेकाना बाद के सालन में अञ्जाने रहल, लेकिन हाल के शोध से मालूम पड़ई कि ऊ माटी के बर्तन कराची म्यूजियम में राखल गेल हय।

1890 में, सर जॉन वुडबर्न, जे बाद में हैदराबाद (सिंध) के कलेक्टर बनलन, एगो निमन पेंट कइल टेराकोटा के बुद्ध मूर्ति देखलन आ ओई के 1894 में रेलवे ठेकेदार से बचवलन। ई मूर्ति आई लंदन के विक्टोरिया आ अल्बर्ट म्यूजियम में रखल हय।

साइट के खोदाई 1909-10 में हेनरी कजेंस द्वारा कयल गेल, जोन पुरातात्त्विक सर्वेक्षण विभाग के पश्चिमी सर्किल के अधीक्षक रहलन। कजेंस बतवलन कि ऊ ई देखके चकित रह गेल कि मुख्य स्तूप अबहियो बचल हय। ई टेराकोटा बौद्ध स्मारक के नष्ट होखे से बचायल गेल।

पुरातात्त्विक अवशेष

खोदाई के दौरान जोन चीज देखे के मिलल ऊ एगो लेयर में पक्का ईंट के दीवार रहल, जे बहुते कचड़ा के बीच में से बाहर निकलल। स्तूप के गोल आधार एगो चौकस प्लेटफॉर्म पर टिकायल रहलक, जोन शायद पहिले के संरचना के हिस्सा रहल होयत । ई प्लेटफॉर्म पर एगो बड़का हरमिका (चौरस शिखर) रहल, जेमें बुद्ध या कउनो बौद्ध संत के पवित्र अवशेष रखल गेल हो सकै अ ।

काहू-जो-दरो स्तूप से एगो पत्थर के अवशेष पात्र भी मिलल। ओकरा अंदर छोटका क्रिस्टल के बोतल, उज्जर बालु , मूंगा आ क्रिस्टल के माला, सोना के चार गो माला, एगो छोटका सोना के तार वाला अंगूठी, तांबा के सिक्का, आ कुछ और सामग्री सब मिलल। क्रिस्टल के बोतल में एगो छोट सिल्वर के केस मिलल, जोन एगो चुटकी भर सामग्री के गोल्ड के पन्नी में लपेटल रहलक।

ई खोज से सोचल गेल कि ई अवशेष दू अलग-अलग व्यक्ति के रहल हो सकै अ। लिखित प्रमाण या साहित्य के अभाव में ई अवशेष के सटीक पहचान अबहियो एगो रहस्य हय।

1

fig 1

लुम्बिनी से काहू-जो-दरो तक अशोक सम्राट

2

fig 2

लुम्बिनी से काहू-जो-द

3

Fig. 1 Site map of Kahu-jo-daro Stupa, Mirpurkhas, Sindh, Pakistan

Fig. 2 Kahu-jo-daro Stupa site pic, Mirpurkhas, Sindh, Pakistan, 2012

Fig. 3 Site view before excavation, Kahu-jo-daro Stupa, Mirpurkhas, Sindh, Pakistan, Photo Courtesy: Archaeological Survey of India

लिपि या साहित्यिक प्रमाण के अभाव में, काहू-जो-दरो स्तूप के अवशेष के पहचान अबहियो एगो रहस्य बनल रह गेल हय। हालांकि, एकर महत्व नजरअंदाज न कयल जा सकै अ ।

रोचक बात ई हय कि उत्तर प्रदेश के सहेत-महेत में पनाहियाम झर के बर्बाद स्तूप में मिले वाला समान पत्थर के अवशेष पात्र के तारीख सर जॉन मार्शल के अनुसार 3 री आ 4 थी सदी ईसा पूर्व के हय। यहण तरह के पात्र काठियावार, गुजरात के जुनागढ़ नियर बोरिया स्तूप में भी पावल गेल हय । (जोन अब जुनागढ़ म्यूजियम में हय)।

मूल रूप से, काहू-जो-दरो स्तूप के सजावट 11 टेराकोटा के राहत पैनल से कयल गेल रहे, जोन बुद्ध के बैठे रूप में चारो ओर प्लेटफॉर्म के कोना पर राखल रहे । उत्तर, पूर्व, आ दक्षिण हिस्सा में तीन बड़हन पैनल (लगभग 65 सेंटीमीटर उँचाई में) आ पश्चिम हिस्सा के प्रवेश द्वार के दूनो किनारा पर दू गो छोट पैनल रहल (Fig. 4)। खुदाई के समय, कुल सात बड़का चित्र आ एगो छोट चित्र सही जगह पर मिलल। पूर्वी हिस्सा पर दक्षिण निच, दक्षिण हिस्सा पर पूर्वी निच, आ

पश्चिम हिस्सा के प्रवेश द्वार पर उत्तर दिशा वाला निच से चित्र गायब रहे। दूगो बड़का चित्र (एगो बैठल

4

Fig. 4 West face of Kahu-jo-daro Stupa, Mirpurkhas, Sindh, Pakistan, Photo Courtesy: Archaeological Survey of India

आ एगो सिर वाला) जोन रेलवे ठेकेदारन से बचायल गेल रहे, ओकरा में से एगो (बुद्ध के बैठल चित्र) अभी विक्टोरिया आ अल्बर्ट म्यूजियम, लंदन के संग्रह में हय (Fig. 5)। ई सबे टेराकोटा के मूर्ति मूल रूप से रंगीन रहे।

खुदाई कर्ता के अनुसार, प्लेटफॉर्म के चारो हिस्सा से सुरक्षित राखे खातिर केवल छह बुद्ध मूर्ति हटायल गेल। हालांकि, मुंबई के छत्रपति शिवाजी महाराज वस्तु संग्रहालय (CSMVS) के संग्रह में, अई समूह के एगो बुद्ध के मूर्ति रखल हय, जोन गंधार शैली में एगो छोट स्टूल पर पल्थी लगा

के बैठल हय, आ ओई पर ओही साइट संख्या अंकित हय, जोन खुदाई रिपोर्ट में उल्लेख न हय, लेकिन हाल में ASI के अभिलेख में एगो साइट फोटो में देखल गेल हय (Fig. 6)।

काहू-जो-दरो शायद ई क्षेत्र के एगो अकेला साइट हय, जोन अब तक एतना बुद्ध मूर्ति पैनल(क्रम) प्रदान कइलक। ई क्षेत्र के अन्य साइट, जइसन थुल-मिर-रुकन, सुधेरांजोडरो, आ डेपरघांगरो जईसन जगह सब भी टेराकोट के काज से सजावल गेल रहे के सबसे अधिक संभावना' हय।

Votive tablet with design

ई साइट पर सैकड़ों सूखल माटी के व्रती (पब्नैती) क्ले टैबलेट(votive clay tablets) भी प्रदान कयलक, जोन नालंदा आ सारनाथ, पूर्वी भारत में मिलल समान टैबलेट जइसन रहे। ई टैबलेट तीर्थयात्री लोग द्वारा चढ़ावा के रूप में प्रयोग कयल जाईत रहे आ टैबलेट सब स्तूप के प्रवेश द्वार पर तीनों मंदिर(पूजा स्थल) के सामने ढेर में पायल गेल। ई टैबलेट तांबा के सिक्का के साथ जमीन से लगभग 15 सेंटीमीटर नीचे मिलल।

लुम्बिनी से काहू-जो-दरो तक अशोक सम्राट

6

Fig. 6 Seated Buddha, Terracotta, Kahu-jo-daro Stupa, Mirpurkhas, Sindh, Pakistan, 5th century CE, Coll.: CSMVS, TC 2

बाकी के वस्तु, जोन CSMVS म्यूजियम के संग्रह में हय, मुख्य रूप से ई सब सजावटी प्रकार के है आ ई बेस के बाहरी चेहरा आ स्तूप पर सजावट के लेल इस्तेमाल कयल जाई अ। म्यूजियम के रिकॉर्ड के अनुसार, संग्रह में 297 मोल्डेड ईंट आ वास्तुकला के टुकड़ा हय; पाँच बड़का उच्च शान्त मुद्रा में बैठल बुद्ध के मूर्ति; आ एगो छोट मूर्ति जोन दीवाल के सजावटी आकृति(niche)में एगो खड़ा पुरुष (जोन एगो भक्त) के रूप में पहचाननल गेल , दूगो गोलाकार पैनल जोन कुबेर के चित्र दर्शवै अ, कुछ आयताकार ईंट में संभवतः जाम्भाला (?) के चित्र हय , बहुत संख्या में राउदा में सूखायल माटी के टैबलेट, आ एगो छोट पत्थर के टुकड़ा जोन एगो जातक कथा के चित्रित करत हय।

सिंध में बौद्ध धम्म

सिंध में बौद्ध धम्म कब आ कैसे पहुंचल, एकर सही समय बतावल मुश्किल बा काहे कि पुरातात्त्विक आ साहित्यिक सामग्री के कमी हय। एकर बावजूद ई साफ बा कि गंधार क्षेत्र में बौद्ध धम्म के जड़ मौर्य सम्राट अशोक के समय में जमल। ई धम्म बाद में इंडो-ग्रीक, सैथियण, पार्थियन आ कुषाण वंश के शासनकाल में अउर फइलल। खासकर, उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत के

बाजौर में शिनकोट अवशेष पात्र के लेख साबित करै अ कि महान बौद्ध इंडो-ग्रीक राजा मेनांडर हिन्दूकुश आ सिंध के बीच बौद्ध धम्म के प्रचार कयलक।

अई में संदेह न हय कि काहू-जो-दरो के टेराकोट बौद्ध स्तूप क्षेत्र के एगो अलग कलात्मक गतिविधि ना रहे । अशोक, जब तक्षशिला (प्राचीन पेशावर घाटी के पूर्वी क्षेत्र के मुख्य शहर) के गवर्नर नियुक्त भेल (300-273 ई.पू.), त ऊ अई क्षेत्र से गहरा जुड़ाव बना लेलन। बाद में, जब ऊ सम्राट बनलन आ बौद्ध धाम के अपनवलन, त तक्षशिला के ठांव बुद्ध स्तूप बनावे के लेल चुनल गेल , जइसन कि शाहबाजगढ़ी आ मानसेहरा में पायल खरोष्ठी लेख में उल्लेखित हय। ई कई कलात्मक परियोजनन में से एगो रहल, जेकरा ऊ प्रायोजित कयलन।

धार्मिक स्मारक बनावे के गतिविधि कुषाण शासनकाल में तेजी से बढ़ल आ मजबूती से स्थापित भेल। कुषाण वंश के प्रसिद्ध शासक कनिष्क पेसावर के आपन शीतकालीन राजधानी बनयलन। ओई लोग के बौद्ध धम्म के प्रति गहरा लगाव रहे, आ उनकर शासनकाल में आयोजित कश्मीर में चउथी बौद्ध परिषद के आयोजन भेल। मौजूद बड़का स्तूप, जइसन मोहनजोदड़ो के क्षेत्र में मौजूद हय, ओई समय के रोचक वास्तुकला के उदाहरण हय। मोहनजोदड़ो के बौद्ध स्थापना के अवशेष से पता चलैत हय कि मुख्य स्तूप केंद्र में रहल आ चारो ओर के अपार्टमेंट बार-बार बनल आ मरम्मत कयल गेल।

चौकोर क्षेत्र के शुरुआती फर्श पुरनका हड़प्पा सभ्यता के ईंट से बनावल गेल रहे। ई सब चीज देखला के बाद हमारा प्रतीत हो रहल हय कि हडप्पा में से ही बौद्ध सभ्यता के विकास भेल हय। सिद्धार्थ गौतम बुद्ध से पहिले जे २७ गो बुद्ध रहे जोन सब हडप्पा सभ्यता से ही शुरुआत हय।

कला परंपरा

ई सच्चाई के बात हय कि उत्तर-पश्चिम भारत के स्थानीय कला परंपरा धीरे-धीरे गांधार क्षेत्र के ग्रीक-रोमन शैली में समाहित हो गेल। ई शैली, मथुरा (उत्तर भारत) के देशी शैली के साथे मिलके एगो भारतीयता में बदल गेल, जेकरा के 'भारत-गांधार कला परंपरा' कहल जा सकै अ।

रुद्रायनावदान के एगो रोचक साहित्यिक संदर्भ में कहल गेल हय कि राजगृह (बिहार) आ रोड़ुहा (आधुनिक रोहड़ी, पश्चिम पाकिस्तान) के बीच निकट व्यापारिक आ सांस्कृतिक संबंध रहे।

इलाहाबाद स्तंभ लेख में समुद्रगुप्त (330-370 ई.) के उत्तर-पश्चिम भारत में गौरवशाली अभियान के उल्लेख मिलै अ, जे गांधार आ मध्य भारत के लोग के आमने-सामने ले आयल आ उनका बीच व्यापार आ संस्कृति के संबंध स्थापित कयलक ।

सिंध क्षेत्र में गुप्त काल के प्रभाव ईंट के स्तूप पर देखल जा सकै अ, जे चंद्रगुप्त द्वितीय (375-412 ई.) के समय के हय। ई बात के पुष्टि महरौली लौह स्तंभ लेख से होई अ।

काहु-जो-दड़ो में कला के तत्व अलग-अलग भौगोलिक जगहन से मिल रहल हय, जे ई संकेत देई अ कि ई क्षेत्र के कलाकार गांधार आ कुशान-गुप्त कला परंपरा के विभिन्न वास्तुकला सिद्धांत, रूप आ डिजाइन आसानी से स्वीकार कर लेललक।

डॉ. मोती चंद्र ई नयका कला विचार आ मंदिर वास्तुकला में नयका अवधारण के रूपांतरण पर टिप्पणी कयलन। ऊ कहलन, " बौद्ध वास्तुकला, अगर पत्थर में बनावे के होईत, त अई में बहुत पइसा आ समय लगैत। लेकिन गुप्त काल के लोग जल्दी में रहलक, ताकि कला आ सौंदर्य के नयका खोज के जल्दी-से-जल्दी आ व्यापक रूप में प्रचार कयल जा सके। ईंट के मंदिर आ स्तूप बनावे आ ओईके नक़्क़ाशीदार आ ढाला गेल ईंट आ मूर्ति से सजायल, उनका सस्ता तरीका लागल।"

ई स्पष्ट हय कि अई क्षेत्र में धार्मिक आस्था अरब विजयोपरांत भी बाँचल रहे। ई बात पाला काल के मूर्तियसब से साबित होईअ, जोनपर उडंदपुर (सिंध, उर्फ़ ओड्डंतपुरी महाविहार, बिहार शरीफ, नालंदा के नजदिक, 11वीं सदी ई.) के एगो बौद्ध भिक्षु के मूर्ति स्थापना के अभिलेख अंकित हय।

मीरपुरखास के काहु-जो-दड़ो स्तूप से सैकड़ों बिना पकावल माटी के पूजनीय टैबलेट आ अरब तांबा के सिक्का स्तूप के पश्चिमी प्रवेश द्वार पर मिलल। ई बात साबित करै अ कि ई स्थान पूजा के रहल आ कम-से-कम 9वीं-10वीं सदी ई. तक ई एगो जीवंत बौद्ध केंद्र रहल।

धार्मिक प्रेरणा

छत्रपति शिवाजी महाराज वस्तु संग्रहालय (CSMVS), मुंबई में काहु-जो-दड़ो स्तूप से मिलल सबसे बड़का आ पूरा संग्रह हय। ई संग्रह 5वीं-6वीं सदी के ई स्थल के धार्मिक आ कलात्मक गतिविधि सब के अध्ययन के समृद्ध स्रोत प्रदान करै अ। ई महत्त्वपूर्ण हय कि बुद्ध के मूर्ति सब के अलावा, ई स्थल से कोनो विशिष्ट महायान मूर्ति न मिलल। हालांकि, भारत के पूरबी आ पश्चिमी

हिस्सा में समकालीन बौद्ध स्मारक सब में बोधिसत्व के प्रचुरता से प्रस्तुति मिलै अ, काहु-जो-दड़ो के बहुत खंडित अवशेष कोनो में महायाना के मूर्ति के संकेत न देई अ।

हालांकि, कुबेर आ जम्भला(?) के मूर्तियन के उपस्थिति केवल दूर के संबंध महायान परंपरा (fig 7) से जोडल जा सकै अ। एही के साथे, स्तूप के संरचना, जे धूप में सुखावल ईंट से बनल हय, सजावटी टेराकोटा आ ईंट से पहिले के हय।

अवशेष के अध्ययन से ई स्पष्ट हय कि काहु-जो-दड़ो के मूल स्तूप संरचना रूढ़िवादी हीनयान बौद्ध धम्म के भक्त लोग सब के बनायल रहल , जे महायान सिद्धांत के केवल थोड़ा-बहुत स्वीकार कयले रहल। ई तथ्य समकालीन चीनी यात्रिय सब के विवरण से पुष्टि होई अ । ह्वेनसांग (629-645 ई.) के डायरी में उल्लेख हय कि सिंध क्षेत्र में बौद्ध धम्म के उच्च पर रहल आ इ क्षेत्र के राजा बौद्ध रहल।

यी-चिंग (671-695 ई.) देखलन कि हीनयान परंपरा के सम्मितीय संप्रदाय अई क्षेत्र में प्रमुख रहल। ई संप्रदाय 3री-4 थी सदी ई. में बहुत लोकप्रिय आ व्यापक रहल, जइसन कि सारनाथ के प्राचीन अभिलेख से साबित होई अ । ई अभिलेख बतावेला कि 3री सदी के आसपास एह संप्रदाय सरवास्तिवादियन के बाहर क देलक। बाद में, ई संप्रदाय हर्षवर्धन (606-647 ई.) के समय आओर प्रमुख हो गेल। यी-चिंग एह काल के समय में अहिच्छत्र, श्रावस्ती, वैशाली, सारनाथ, कपिलवस्तु, मालवा, वलभी आ सिंध क्षेत्र में बड़का संख्या में विहार के उपस्थिति दर्ज कइयन।

ई संभावना बहुत ज्यादा हय कि काहु-जो-दड़ो के मूलत: रउँदा में सुखावल ईंट के स्तूप संरचना शुद्ध रूप से हीनयान के चरित्र वाला रहल। बहुत संभव हय। कि ई बुद्ध के मूर्तियन के प्रचलन से कइएक सदी पहिले से अस्तित्व में रहल होय । महायान प्रभाव 11 बुद्ध शान्त पैनल में देखल जा सकै अ , जे प्लेटफॉर्म के सजावटी क्षेत्र (niche) में मिलल। ई आ अन्य छोटका पैनल संभवतः बाद में जोड़ल गेल रहल, जब सम्मितीय संप्रदाय अपन धार्मिक अभ्यास में बुद्ध के मूर्ति के स्वीकार कयलक।

बौद्ध धम्म अरब विजयोपरांत 715 ई. में भी बाँचल रहल। ई तथ्य सैकड़ों बिना पकावल मिट्टी के पूजनीय टैबलेट आ अरब तांबा के सिक्का, जे स्तूप के प्रवेश द्वार पर मिलल, तै से साबित होई अ । संग्रह में मिलल मिट्टी के टैबलेट 4 सेंटीमीटर से 9 सेंटीमीटर लंबाई में अलग-अलग आकार के हय आ अधिकांश अण्डाकार (oval) रूप में हय। अधिकतर टैबलेट पर ब्राह्मी लिपि (7वीं-8वीं सदी) में "ये धम्म" बुद्ध या स्तूप के छवि के नीचे अंकित हय, जोन नालंदा (अब बिहार में) में मिलल समान टैबलेट से मेल खाई अ।

Fig. 7 Kubera, Terracotta, Kahu-jo-daro Stupa, Mirpurkhas, Sindh, Pakistan, 5th century CE, Dia. approximately 20 cms, Coll.: CSMVS, TC 51

Fig. 8 Nalanda type seals and clay tablets, Kahu-jo-daro Stupa, Mirpurkhas, Sindh, Pakistan, Coll.: CSMVS, M-137, M-146, M-184, M-152

एहि ठाम पर भेटल ईंट में बहुत सुग्घर पैटर्न आ बारीक काज देखल जाई अ। गंधार क्षेत्र के अनुरूप, ई बनावट से बुझाई अ कि ई सजावटी विवरण पर हेलेनिस्टिक प्रभाव हय । इन डिज़ाइन में कै प्रकार के फरेटवर्क, चेकर्स, रोज़ेट्स, लोज़ेंज़, पामलेट्स, टी-पैटर्न मोल्डिंग, स्टाइलाइज्ड पत्ता, अकैंथस आ अन्य रूप शामिल हय (चित्र 9)।

एहि ठाम भेटल सजावटी वास्तुकला के खंड मुख्य रूप से सुग्घर टेराकोटा के मोल्डेड पिलास्टर, मेहराब, कैपिटल, मैडलियन आ ब्रैकेट के डेंटिल्स हे। काहू-जो-दड़ो के टेराकोटा चित्र गुप्त आ गंधार परंपरा के संगम हे, आ एकरा साथे अमरावती, रंगमहल आ टेर के कुछ गुण भी देखाय परे हय। गुप्त परंपरा के प्रभाव साफ-साफ देखाय परैत हय, जइसे कि प्राभावली (हेलो) के सजावट, चित्र के आकार, चेहरा आ शरीर के चिकनाईदार वक्रता, आधा बंद आंख के सुग्घर पलक आ विशेष कान के लोब में (चित्र 10)।

मंच के दीवार में बनल सजावटी आकृति (निच) में बइठल बुद्ध के मूर्ति सभे ऊंचा कमल के आसन पर राखल हय, जेकरा ऊपर एगो आसन (कुशन) बिछायल हय। प्राभावली आ पूरा पैनल के घेरल उठल होय डिज़ाइन चार आ आठ पंखुड़ी वाला फूल से बनल हय। बुद्ध के वस्त्र के एगो खासियत ई हय कि निचला परिधान संगति (चोगा) से थोड़ा बाहर निकलल हय, जोन मुड़ल गोड़ के ढकल हय। महावग्गा से ई स्पष्ट होई अ कि बुद्ध भिक्षु के आचरण आ वस्त्र पहिरला के तरीका पर बहुत ध्यान देईत रहलथिन। एगो बौद्ध भिक्षु के तीन वस्त्र पहिरला जरूरी रहल: एगो डबल कमर वस्त्र, एगो सिंगल ऊपरी वस्त्र आ एगो सिंगल निचला परिधान। बुद्ध के चोगा के नीचे देखल निचला वस्त्र अंतरवस्त्र हय, जोन कमर के चारो ओर लपेटल जाआई आ घुटना तक पहुंचै अ।

स्तूप के पुनर्निर्माण

खुदाई के समय, कौजन्स देखलथिन कि स्तूप में संरचनात्मक गड़बड़ी हो गे हय। उपर के मीना उनीर के भार के कारण चउकोर चबूतरा के दीवार पर सीधा दबाव पड़ल, जइससे दीवार में धंसाव आ बाहर फुलइ के निशान देखे के मिलल। बाद में, दीवार के एक आउर बाहरी परत जोड़के मज़बूत कइल गेल। खुदाई करे वाला के मुताबिक, ई तरीका से चबूतरा के दीवार पर बनल चित्र, सजावटी ईंट आ आउर कलाकृति के कई शताब्दी तक बचाके रखे में मदद मिलल।

9

Fig. 9 Decorative bricks from the Stupa, Terracotta, Kahu-jo-daro Stupa, Mirpurkhas, Sindh, Pakistan, 5th century CE, 15.8 x 16.5 x 8 cms [CSMVS, TC 61], 15.7 x 17 x 6 cms [CSMVS, TC 52], 15.5 x 19.6 x 15 cms [CSMVS, TC 55], 15.4 x 21.5 x 4 cms [CSMVS, TC 263], 14.5 x 21 x 4.5 cms [CSMVS, TC 264]

लुम्बिनी से काहू-

10

Fig. 10 Buddha, Terracotta, Kahu-jo-daro Stupa, Mirpurkhas, Sindh, Pakistan, 5th century CE, 62 x 47 x 12 cms, Coll.: CSMVS, TC 58

लुम्बिनी से काहू सम्राट

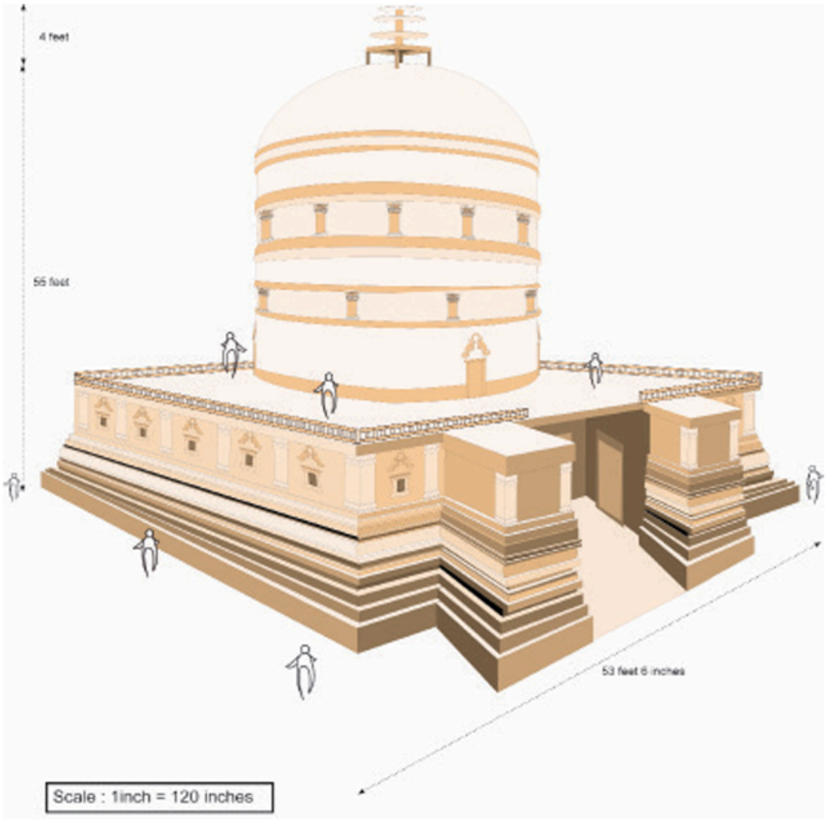

11a

11b
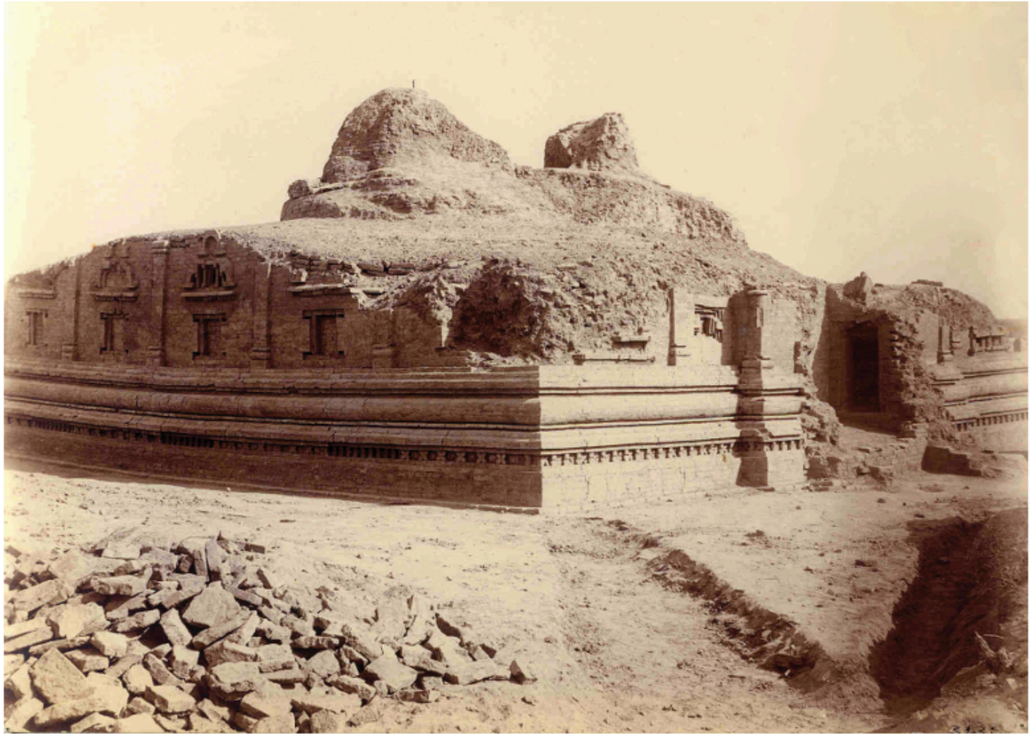

12

13

Fig. 11a Reconstructed North-West face of Kahu-jo-daro Stupa, Mirpurkhas, Sindh, Pakistan

Fig. 11b Site View of North-West face of Kahu-jo-daro Stupa, Mirpurkhas, Sindh, Pakistan, Photo Courtesy: Archaeological Survey of India

Fig. 12 Reconstructed view of West face (entrance) of Kahu-jo-daro Stupa, Mirpurkhas, Sindh, Pakistan

Fig. 13 Devotee, Terracotta, Kahu-jo-daro Stupa, Mirpurkhas, Sindh, Pakistan, 5th century CE, 74 x 32.3 x 15 cms, Coll.: CSMVS, TC 56

काहू-जो-दड़ो के स्तूप के पुनर्निर्माण के कोशिश इहाँ कयल गेल हय। ई सिंधु घाटी के सजावटी टेराकोटा स्तूप वास्तुकला के गिनती के उदाहरण में से एक हय। ई पुनर्निर्माण जीवित वास्तुकला खंड आ मुंबई के छत्रपति शिवाजी महाराज वस्तु संग्रहालय (पहिले प्रिंस ऑफ वेल्स म्यूजियम) में राखल आउर कलाकृति के मदद से कयल गेल हय।
सिर्फ इ बिखरल अवशेष पर निर्भर होके स्तूप के असली आकार के कल्पना करना कठिन हय। बाकि, ई अवशेष के समकालीन स्तूप के आधार पर समझ के, मीरपुर खास में रहल काहू-जो-दड़ो के असली स्तूप के बारे में सही-सही जानकारी मिल जाई अ। (चित्र 11a आ b)

महान प्रवेशद्वार

काहू-जो-दड़ो के घाटी में स्तूप के चारों ओर के भव्य दृश्य के आसानी से कल्पना कयल जा सकै अ । मुख्य स्तूप, जेकर शिखर (हर्मिका) लगभग 20 मीटर ऊंच रहल, अपन ऊंचाई से दूर-दूर तक आएल भक्त आ तीर्थयात्री के प्रेरित करैत रहल होयत। हजारों लोकल भक्त, भारत के विभिन्न हिस्सा आ संभवतः अन्य देश से आयल लोग, ओई महान आत्मा के सम्मान देवे खातिर इहाँ जुटल होयत, जेकरा शारीरिक अवशेष ई स्तूप में सुरक्षित रहल हय (चित्र 12)।

पश्चिम से आएल तीर्थयात्री मुख्य प्रवेशद्वार तक पहुँचत, जे शायद सजावटी ईंटा से सजावल गेल होयत आ संभवतः एक तोरण द्वार से सुसज्जित होयत, जइसन कि साँचो में देखे के मिलै अ । प्रवेशद्वार से गुजरके, ऊ लोग परिक्रमा करत (एक परंपरा जे आज भी भारत के बौद्ध आ जैन में पालन कयल जाई अ) चबूतरा के चारों ओर घूमैत, जोन बीच में अवशेष सब के धारण कयले रहल आ जे ई विशाल स्तूप के आधार बनल।

परिक्रमा करैत-करैत ऊ लोग चबूतरा के दीवार में बनल सजावटी आकृति(niche) में बइठल बुद्ध के मूर्तिय सब के दर्शन करैत, आ पश्चिम दिशा के मध्य भाग से स्तूप में प्रवेश करैत रहलक। भीतर, तीन छोट मंदिर के समूह रहल होयत, जइमें शायद बुद्ध के मूर्ति सब रहल होयत, जेकर प्रमाण हर वर्गाकार मंदिर के बीच में उँचाईदार आयताकार आसन के रूप में देखे के मिलै अ। ई छोट कमरा सभे से एकमात्र बचल अवशेष एगो बड़का टेराकोटा बास-रिलीफ हय, जे लगभग 76 सेमी ऊंच खड़ा आदमी के दिखाबै अ, आ जोन मध्य मंदिर के उत्तर दीवार से टिकल मिलल। ई

लुम्बिनी से काहू-जो-दरो तक अशोक सम्राट

मूर्ति, सबसे अधिक संभावना हय, एगो दानदाता शिष्य के प्रतीक हय, जे अब तक के मिले वाला एकमात्र लौकिक छवि हवे (चित्र 13)।

मंदिर सभे के छत अगाड़ी-गुंबदाकार रहल, आ ईंट के कोरबेलिंग पैटर्न से सजायल गेल रहल (एगो परंपरा जे सिंधु सभ्यता के समय 3200-1800 ईसा पूर्व तक प्रचलित रहल)। ई मंदिर समूह के दूनों तरफ सीढ़ी के जोड़ा पश्चिम ओर ऊपर के ओर चढैत रहल, जइसे गोलाकार स्तूप के परिक्रमा करे के लेल मंच पर ले जाए।

चउकोर चबूतरा

स्तूप के बहुते सजावल चउकोर चबूतरा जमीन से लगभग 6 मीटर ऊपर रहल आ बिना पश्चिम मुख के मध्य में स्थित पंचरथ (पाँच प्रक्षेप) के गिने करीब 18 मीटर वर्गाकार रहल। स्तूप के पश्चिमी मुह के प्रवेशद्वार के दूनु ओर के दीवार, मोल्डिंग वाले आधार के ऊपर, चार भाग में बंटायल रहल। कोना वाला भाग बड़का रहल आ शायद ओईमें खिड़की के फ्रेम के भीतर बंद-झरोखा (ब्लाइंड-लैटिस्ड) खिड़की रहल। प्रवेशद्वार के दूनों ओर के अन्य दू भाग में एगो पैनल सजायल गेल रहे, जेमे एगो छोट बइठल बुद्ध के मूर्ति एगो खास डिज़ाइन वाला फ्रेम में शामिल रहे (चित्र 14)।

जइसे पश्चिमी मुख सजायल गेल रहे , ओसहीं आधार के ऊपर बाकी तीन मुख सजायल गे रहे। हर ओर मोल्डिंग के ऊपर के जगह पांच भाग में बाँटल रहल, जोन पिलास्टर से अलग कयल गे रहे । हर मुख के तीन मध्य सजावटी क्षेत्र (niche) में ध्यानमग्न बइठल बुद्ध के टेराकोटा मूर्ति रहे , जबकि अन्य niche में आयताकार बंद-झरोखा (ब्लाइंड-लैटिस्ड) खिड़की रहल। मोल्डिंग के सबसे निचला भाग में वर्गाकार पैनल के रूप में अलग-अलग आकृति देखायल गेल रहे , जोन चार पंखुड़ी के सेट से बानहल रहे (चित्र 15)।

गोलाकार मीनार

स्तूप के भव्य मीनार (जे अब गायब हय) एक समय बहुते सजायल गेल रहे, जोन मे एक या अधिक पट्टी पलास्टर के रहल, आ पलास्टर के बीच मूर्ति के niche बनल रहे । ई मीनार पर सजावटी आकृति आ मोल्डिंग वाला ईंटा के अनेक धागा-जैसन बेल्ट बनायल गेल रहे (चित्र 16)। अई ठाम से भेटल टुटल-फुटल मोल्डिंग आ सजावटी ईंटा के बेशी संख्या ई इशारा करै अ कि ई मीनार ठुल-मीर-रुकाल (मोरों के नियरा), ब्राह्मणाबाद के नजदीक डेपरघागरो, टांडो मुहम्मद खान के नजदीक सुधेरंजोडरो, आ जेरुक के नजदीक के स्तूप मीनार सभे से बहुते मेल खा रहल हय।

15

16

Fig. 15 Reconstructed view of South face of Kahu-jo-daro Stupa, Mirpurkhas, Sindh, Pakistan

Fig. 16 Reconstructed view of cylindrical tower from North-West, Kahu-jo-daro Stupa, Mirpurkhas, Sindh, Pakistan

काहू-जो-दड़ो स्तूप के मीनार (अब गायब) के भव्यता, जोन लगभग 18 मीटर ऊँच रहल (हर्मिका आ छतरी के छोड़ के), दक्षिण भारत के अमरावती स्तूप के आ आधुनिक भारत के सारनाथ में धमेख स्तूप के बहुते सजावल मीनार के तुलना में देखल जा सकैत हय । ई मीनार, जेकरा ऊपर हर्मिका रहल, संभवतः एगो विशाल लकड़ी के तिहरा छतरी से मोडल रहल।

निष्कर्ष

ई बात के देखके बड़ा रोचक लगै अ कि सिंध के स्तूप, गुजरात के देवनीमोरी के महास्तूप आ

बिहार आ बांग्लादेश, नेपाल के बाद के स्तूप सभे गंधार परंपरा के अनुसरण कयलक, जोन चउकोर चबूतरा पर गोल गुम्बद के समर्थन करै अ । ई परंपरा मूल रूप से कुषाण काल (1वी-2री सदी ईस्वी) में विकसित भेल। लेकिन मीरपुरखास के मूल स्थापना के संभावित तारीख अबहियो अनिश्चित न हय, काहेकि शिलालेख आ अन्य साहित्यिक प्रमाण के अभाव हय।

वास्तुकला के डिजाइन आ सजावट के दृष्टिकोण से देखल जाए त ई मानल जा सकै अ कि काहू-जो-दड़ो के पुनर्निर्मित स्तूप पश्चिम भारत के देवनीमोरी स्तूप (4री-5वी सदी ईस्वी) के बहुते नजदीक लगै अ । दुनों स्तूप गंधार के 2री-5वी सदी ईस्वी के प्रचलित शैलीगत परंपरा के निकटता के देखबै अ ।

स्तूप के पुनर्निर्माण आ जीर्णोद्धार बौद्ध परंपरा में बहुते प्रसिद्ध रहल। ऊ लोग एगो स्तूप के नवा आकार में जोड़त या ओकरा बड़का आवरण में ढांकत, आ अई तरह के काम के बहुते पुण्यकारी मानल जाई अ। गंधार आ सिंध क्षेत्र में आ भारत के अन्य स्थानन पर लगभग सभ महत्वपूर्ण स्तूप ई परंपरा के अनुसरण कयलक।

अंत में, हम कहेला चाहै छि कि मीरपुरखास में काहू-जो-दड़ो स्तूप के मूल संरचना शायद शुरूआती काल (५००० से ८००० वर्ष पुराना) के रहल, आ बाद में ई 4री-5वी सदी ईस्वी में बड़का बदलाव से गुजरल, जोन ओई समय के टेढ़ा-मेढ़ा आ सजावटी ईंटा के बड़ी संख्या से स्पष्ट हो रहल हय। ईंटा सब के सामान्य आकार 42.5 x 25 x 7.5 सेंटीमीटर रहल, जोन फिर से गुप्तकालीन मंदिर, जइसे भितरगांव, टेर आ देवनीमोरी के ईंटा के समान हय।

दुर्भाग्य से, भारत- नेपाल में हमनी के राजनीतिक उदासीनता आ मानव अज्ञानता के कारण काहू-जो-दड़ो के दुर्लभ टेराकोटा बुद्ध स्तूप जइसन कई ऐतिहासिक महत्व के स्मारक खो देली। लेकिन अभी तक युनेस्को, अलग-अलग देश के प्राधिकरण या नागरिक समाज द्वारा ई सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण आ सुरक्षा खातिर कोनो ईमानदारि प्रयास न भेल।

आज के समय में सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण शांति आ समृद्धि के परिस्थितियन में भी एगो बड़का चुनौती बनल हय।

1 https://www.swadeshnews.in/Encyc/2016/5/29/indus-era-8000-years-old-not-5500-85747.aspx

2 https://youtu.be/wHigBTYp5IQ?si=rxMIHBF6_LaBxOxj

3 [The-Lost-Terracotta.pdf]

END NOTES

[1] H. Cousens, 'Buddhist Stupa at Mirpurkhas, Sindh, *Archaeological Survey of India, Annual Report*; 1909-10, p.80. Reprint 2002, New Delhi.

[2] *Journal of the Mahabodhi Society*, April 1934, Vol.42, No.4, pp.186-87.

[3] Moti Chandra, 'A Study in the Terracotta from Mirpurkhas', in the *Bulletin of the Prince of Wales Museum of Western India*, No. 7, 1959-1962 edited by Moti Chandra, 1964, pp-3.

[4] Nalinaksha Dutta, *Buddhist sects in India*, Indological Book House, Varanasi, 1977, pp.194, 195, 303.

[5] Kalpana Desai, *Jewels on the Crescent, Masterpieces of Chhatrapati Shivaji Maharaj Vastu Sangrahalaya, Formerly Prince of Wales Museum of Western India, Mumbai,* 2002, pp.228.

END NOTES

1 H. Cousens, 'Buddhist Stupa at Mirpurkhas, Sindh, Archaeological Survey of India, Annual Report; 1909-10, p.80. Reprint 2002, New Delhi. 2 Journal of the Mahabodhi Society, April 1934, Vol.42, No.4, pp.186-87. 3 Moti Chandra, 'A Study in the Terracotta from Mirpurkhas', in the Bulletin of the Prince of Wales Museum of Western India, No. 7, 1959-1962 edited by Moti Chandra, 1964, pp-3. 4 Nalinaksha Dutta, Buddhist sects in India, Indological Book House, Varanasi, 1977, pp.194, 195, 303. 5 Kalpana Desai, Jewels on the Crescent, Masterpieces of Chhatrapati Shivaji Maharaj Vastu Sangrahalaya, Formerly Prince of Wales Museum of Western India, Mumbai, 2002, pp.228

लुम्बिनी से काहू-जो-दरो तक अशोक सम्राट